AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

मगही लोकगीतों में जाति एवं कर्म गीतों का महत्व

रामनिवास शर्मा
एम.ए.हिन्दी
हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY MEFOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER.IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BELEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OFSUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OFCONTENTAMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NOVISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTEDTHIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLYHIDDENBY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR ATTHE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

लोकगीत अर्थात लोगों द्वारा समूह में एक साथ गाये जाने वाला गीत जो वहाँ के लोक भाषा में गाया जाता हो अर्थात हम यह कह सकते हैं कि जब किसी भी मंगल कार्य या कोई भी कार्य करते हुए लोक में स्त्रियां अपनी लोकभाषा में गीत गाकर अपने कार्य को सहर्ष संपूर्ण करती है। भारत एक विशाल देश के रूप में जाना जाता है जहाँ अनेकों भाषाएं विभिन्न संस्कृतियां भिन्न भिन्न वेशभूषा अलग अलग बोली आदि भिन्नताएं स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है तत्पश्चात भारत की एकता तटस्थ रूप से विद्यमान हैं। भारत में इतनी भिन्नतोओ के बाद भी भारत एकता का प्रतीक बनकर सम्मानपूर्वक तटस्थ खड़ा हैं।

भारत के हर क्षेत्र की भाषा बोली अलग अलग है परन्तु विभिन्नतओ में भी समानता दिखाई देती है। सभी क्षेत्रों की भाषा बोली अलग होने के बावजूद भी उनके लोकगीतो में भाव एक समान दृष्टव्य है। अनेको बोलियों मैं से हम यहाँ मगही लोक गीतों में जाति एवं कर्म गीत की चर्चा करेगें। भारत के पूर्वी क्षेत्र में स्थित बिहार राज्य में मगही बोली

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

जाती है वैसे तो देश के विभिन्न क्षेत्रों में अलग अलग परंपराएं देखने को मिलती है परंतु सभी की एक समानता है कि सभी परंपराएं समाज के कल्याण से जुडें हैं। भारत के इतिहास को अगर हम पलटकर देखते हैं तो यह स्पष्ट रूप से पाते हैं कि प्राचीन समय में जाति व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था का कितना बोलबाला था, किस प्रकार जाति के आधार पर उसके कर्म को निर्धारित किया जाता था। जिस तरह प्रकृति का संतुलित रूप से चलने के लिए जानवर अपने भेजन के लिए एक दूसरे पर आश्रित रहते हैं तथा इससे प्रकृति सुचारू रूप से संतुलित बनी रहती है, ठीक उसी प्रकार समाज को संतुलित एवं सुव्यवस्थित रखने के लिए हर मनुष्य का कार्य निर्धारित रूप से तय हैं। मनुष्य का यह कार्य उसकी जाति कर्म के अनुसार पृथक कर दिया गया है। समाज में जाति एवं वर्ण का इतना बोलबाला है कि मनुष्य से उसकी जाति ही सर्वप्रथम पूछी जाती है तत्पश्चात उसको पहचाना जाता है कि वह कौन है ? अर्थात जाति से उनके कर्मा को निर्धारित किया जाता है। प्राचीन समय से चलता आ रहा जाति के नाम से उनके वैशिष्ट का पता चलता है। जाति के आधार पर उन्हें कर्म दिया जाता है जिससे की किसी एक जाति का वही कर्म है यह हमेशा के लिए तय कर दिया गया है, जिससे उनके पेशे का पता जाति पूछकर ही चल जाता है। उदाहरण के तौर पर देखे तो हम अपने आस पास ही देख सकते हैं जैसे कपड़े धोने वालों की धोबी कहते हैं अर्थात इन सबकी जाति धोबी है, जिसका कर्म कपड़े धोना निर्धारित रूप से तय हैं एवं वर्तमान समय में भी इ सकी मौजूदगी देखी जा सकती है।

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

उपर्युक्त सभी बातों को हम मगही लोक गीतों में देख सकते हैं। मगही लोक गीतों की विशेषता है कि इनमें सभी जातियों के बारे में गीत लिखे हैं। जिसका सस्वर गायन कार्य करते समय मनुष्य अपनी जाति के अनुसार गाते है।

भारत एक कृषि प्रधान देश कहलाता है तथा यह कथन प्राचीन काल से चला आ रहा है। कृषि भारत का प्रमुख कार्य है और साथ ही साथ मवेशियों को चराना, कुटीर उद्योगो को विकास करना यह सब भारत में विद्यमान है। मगही लोक गीतों में कृषि एवं कुटीर उद्योगो के संदर्भ में गीत गाया जाता है। कृषि के हर पड़ाव पर गीत लिखे गए हैं। महिलाएं कृषि करते समय इन गीतों को गुनगुनाती हुई एवं सस्वर गायन करती हुई अपने कार्य को पूर्ण करती है। जब स्त्रियां लोकम गीत गाती हुई अपना कार्य कर रही होती है तब उन्हें कठिन कार्य में भी मनोरंजन मिलता है जिससे कि हुई अपना कार्य सुचारू रूप से पूरा करती है।

जाति एवं कर्म के लोकगीतों का गायन प्रमुखता से तब होता है जब खेत में धान रोपते समय, फसल काटते समय, सोहनी करते समय, आदि समयों पर स्त्री पुरूष लोकगीतों की कोमलता भरी रागिनी में सस्वर मीठी आवाज में गा रही होती है। लोक गीतों में इतनी शक्ति होती है कि उकने गायन मात्र से ही वातावरण झंकृत हो उठता है। तारे में चित्र लगने लगता है और कार्य करने में मनोरंजन का आभास भी होता है। गृह कार्य करते समय अथवा वाही कार्य करते समय स्त्रियाँ लोक गीत का आनंद लेती है उदाहरण जांता पीसते समय, धान

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

कूटते समय और घास गढ़ते समय स्त्रियां अपने सा स्वर मीठी गायन से वातावरण में एक नया तेज उत्पन्न करती है जिसके आलोक में एक नई ऊर्जा का संचार होता है और नया कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

चार कार्य बंटे हुए होने के कारण उनके हर एक कार्य के लिए अलग अलग लोकगीत लिखित है। बस धोबिन जब कपड़े धोती हैं। तब उस धोते समय के लिए एक गीत है जब धोबीनिया धोबी गंदी कपड़ो को पटकती है उस स्वर को भी शब्द दिए गए हैं, इसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है:–

"छियो राम छियो, छियो राम छियो, छियो राम छियो।

निमिया के पेड़वा बड़ नीक लागे, जब नीम कौठिया होय।

अच्छा धोबिन बड़ नीक लागे, जब धोने बगुलवा के पाँच।

छियो राम छिया।"

नदी के तट पर बैठकर कपड़े धोते–धोते धोबी यह गीत गाता है इसमें उसकी भावनात्मक दीनता का वर्णन है। लोकगीतों में मुख्यतः प्रकृति को देखा जा सकता है। लोकजन पर्यावरण से जुड़े होने के कारण स्वयं ही लोक गीतों में पर्यावरण का जुड़ाव हो जाता है। लोक गीत के गायन से काम के प्रति अपनापन अथवा लगाव होता है तथा कार्य करने में मन रमता है और इनसे उपदेश की प्राप्ति भी होती है।

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

इन लोकगीतों को रोपनी, कोंडनी, सोहनी, चरखा–तकली, कूटनी–पीसनी आदि के नाम से जानते हैं। उपर्युक्त लोक गीतों में जाति के आधार पर कार्यो के विभाजन के आधार पर अलग लोकगीत है। लोकगीत का संबंध केवल काम से नहीं है बल्कि अनेक विषयों के लोकधर्मी एवं लोकसांस्कृतिक का जुड़ाव भी नजर आता है।

कर्म के गीतों में भी पारिवारिक एवं समाजिक संबंधो का वर्णन मिलता है। परिवार में यह समाज में किसी को कुछ कहने के लिए चाहे वह राग में हो, द्वेष में हो, या ईर्ष्यो आदि में इसका वर्णन भी लोक गीतों में मिलता है। इसका एक संक्षिप्त उदाहरण प्रस्तुत है–

"बेरी ही बेर तोरा बरजू छयलवा से उखिया के खेत जनी जोतिहं हो राम ।"

इसके पश्चात् कर्म के आधार पर एक गीत है जो सुअर चराने का गीत के नाम सये जाना जाता है इसका उदाहरण देखिए कि किस प्रकार जाति वर्ण के आधार पर गीतों का अंकन किया गया है।

"संझिया के सुतल में रहूदी उगलो भला किरिमिगया गे,

भुखलों सुअरिया में रदुदि खारोअउ भला देवलिया गे,

हमहूँ जे करबउ गे मईया, रहुदी से विअहवा भला गे।"

हजारीबाग एंव चतरा क्षेत्र के जंगलो में निम्न जाति के लोग सुअर चराते समय यह गीत का गायन करते हैं। वहाँ की स्त्रियाँ सुआर को चराने कठिन परिश्रम करके जंगलों में ले जाया करती हैं। जिसके

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

कारण वह यह गीत गाकर वहाँ अपना साहस बढ़ाती है तथा सूअर के चर ने तक वही गीत गाकर अपना मनोरंजन करती हुए अपने कार्य को पूर्णतः सच्चे मन से अंजाम देती है।

जाति संबंधी गीत को वहाँ रहने वाले ग्राम बांसी के लिए लोक देव है, जिन की वीर गाथाओ से युक्त लोकगीतों जाति गीतों में गिने जाते हैं।

भारत में अनेक छोटी छोटी जातियां दृष्टव्य है और उन सभी जातियों का अपना अलग अलग लोकगीत है जो सभी जाति के कर्मो के अनुसार निर्धारित है। अपने अपने कार्यो के अनुसार ही इस क्रिया लोकगीत का गायन करती है। भारत में मौजूद जाति चमार, धोबी, कहार, लुहार, सभी के अपने अपने पृथक लोकगीत को गाया करते है।

लोकगीतों को इस हद तक जातियों में पृथक किया गया है कि गीतों को सुनकर लोग यह निर्णय लेने में सक्षम रहते हैं कि यह गीत कौन से जाति के लोग गा रहे हैं। लोकगीतों के माध्यम से उनके पेशो का भी पता चल जाता है। लोक गीत के गायन से जाति का संबंध ज्ञात होता है। सभी जाति वर्ग का संबोधन भिन्न भिन्न है। अहीरों द्वारा गाए जाने वाले गीत को विरहा नाम से जाना जाता है।

भारतीय परंपरा में कितनी बारीकियों से किसी एक क्षेत्र के लोग अपनी एक अलग बोली से क्षेत्र का निर्माण कर अपने हर एक कार्य के लिए गीतों के माध्यम से मनोरंजन का साधन बना लेती हैं।

जाति संबंधी गीत मुकुल दृष्टव्य है–

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

"गंजवा पीअइते हो जोगी रहिआ चले अन्हाधुन हो,

राम–राम जपीहँ हो जोगी सूरूज तूँ सेविहं हो।"

जाति विशेष लोकगीतों से किसी विशेष जाति के क्रियाकलापों का बोध होता है। इन्हीं में से एक जाति है दुसाधा जाति। दुसाध जाति के लोगों को अपनी जाति विशेष पूजा होती है जिसमें वे अपने राह बाबा जिन्हें वे जाति के देवता के रूप में पूजते हैं। पूरा करने के समय अग्नि प्रज्वलित करके उनको अग्नि पर से चलकर जाना जाता है यह कार्य पुरूषो द्वारा संपन्न किया जाता है तथा वहाँ बैठी स्त्रियां अपने अपनी शक्ति साध्वी रूद्रवा के गीत गाकर उस पूज्य स्थान को भाव विभोर करती हैं। इस जाति विशेष लोक गीत से उनके जाति के कार्य का परिचय बोधगम्य होता है।

"दुसाध जाति की राज पूजा के गीत का एक संक्षिप्त उदाहरण प्रस्तुत है–

संझिया के सूतले गे रूदवा उगलउ कीरिंगिया गे।

गोह के अरतवा गे रूदवा धूमइ लो नहिं होयलों गे।।"

रोपनी गीत भी जाति का सूचक बनकर हमारे सामने उभरता है। धान रोपते समय खेत में मजदूरी कर रहे लोगो द्वारा गाए जाने वाला गीत है। रोपणी सोहनी गीत को महिलाएं समूह में गाती हुई अपने कार्य को पूर्ण करती है। बस गीतो के माध्यम से ही स्त्रियां अ पने परिवार में दिन प्रतिदिन चलने वाले नोकझोंक का सुरूचिपूर्ण वर्णन करती है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

अर्थात लोकगीतों के माध्यम से स्त्रियां अपने घर के लड़ाई झगड़े को भी गीतों के माध्यम से अपने सामूहिक परिवार के समक्ष प्रकट करती है। इसका एक उदाहरण देखिए जिसमें अपने प्रिय से बिछड़ने का दर्द स्पष्ट नजर आ रहा है कि किस प्रकार ननद से झगड़ने के कारण पति दूसरे देश चला गया है और पति के जाने की खबर सुन उसकी भौ जीरो रही है ऐसी स्थिति को देखकर नायिका का मन उदास है वह बेचैन प्रतीत हो रही है।

"ननदी झगरवा कइली...........

....छातिया हो राम।"

रोपणी करते समय लोग पारिवारिक समस्याओ को गीतो के माध्यम से सामूहिक रूप से उजागर करते हैं तथपा प्रकृति का भी गायन करते हैं जैसे 'चानो, अपने सात भाईयो की बहन का गंवाना करने की अचानक सूचना आई वह सोचती गवना किसने इतनी जल्दी निश्चित कर दिया किसने सारी तैयारी की, किसने गाय भैस दान दिए किसने खोइया भरा इ नके जवाब भी गीतो में ही दिए गए हैं भैया ने गाय भैंसों दान किया भाभी ने खोइछा भरा पिता ने डोली दी और माता ने उसे डोली पर पर्दा लगा दिया।

इस धान की रोपनी करते करते एक बहन ने भाईयो और भाभी एवं माता पिता से गीतों के माध्यम से अपने गवना की बात को स्पष्ट रख दिया और उसे उतर भी प्राप्त हुआ लोकगीत समक्ष रूप से लोक जन एवं लोक कल्याण से जुड़ा है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

रोपनी गीत का उदाहरण

"सात ही भठया के एक............. ....

ओहरवा रे दइयो।"

मगही लोक गीतों में कर्म के गीत विद्यमान हैं। यहाँ पर किस प्रकार समाज में पुत्रवधू को देखा जाता है इसका पूर्णन बखूबी देखा जा सकता है किस प्रकार पुत्रवधू अपनी सास से डर रहती है और पुरूष भी अपनी पत्नी को प्रताड़ित कर चोट पहुंचाता है और किस प्रकार पुत्रवुधु के द्वारा गेहूं मन सांप को उसकी सासू माँ को बाई मछली का नाम देती है और उसे भोजन में पकाने को कहती है तथप पुत्रवधू की बातों को अनसुना करती जिसके फलस्वरूप बट पुत्रवधु को उनकी आज्ञा का पालन न चाहते हुए भी करना पड़ता है जिसके कारण पुत्रवधु की मृत्यु हो जाती है उसके पश्चात भी उसकी सासु माँ को ज्ञात नही होता की पित्र वधु मृत्यु को प्राप्त हो चुकी है जब उसका पुत्र खेत से मजदुरी करे घर आता है तब अपनी पत्नी को खोजकर कर ता हुआ माँ से पूछता है माँ ने उतर देते हुए कहती हैं वह अपने घर में रसोई होगी रेड़ की डाली से जाकर उठाला, पुत्र से एक डंडा ले जाने को कहती और उसी डंडे से मार–मार के उठाने को कहती पुत्र एक डंडा मारता है फिर दूसरा मारता है मिफर तीसरा भी मातर है परन्तु पत्नी हिलती डुलती प्रतीत नही होती तब जाकर पति ने माँ को कोसते हुए कहा की माँ तुमने मरी हुई को भी डंडा मरवा दिया।

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

इस पूरी घटना से यह स्पष्ट होता है कि किस प्रकार से जाति एवं कर्म

पर यह बात कही हुई है स्त्री को कम आंका जाता है पुरूषो को प्रधान समझा जाता है सास अपनी बहू पर अत्याचार करती है समाज में होने वाले हर एक भावों को लोकगीतों में पिरोया गया है जिसका उदाहरण प्रस्तुत है

"सासु के इरखे हम घर लिए चलती से सान्ही में से निकलल गेहुमन सपवा रे दइयों।

छेरल हो राम।।"

इसी गीत में नायिका कहती हैं कि एक योगी आया है भरी धूप में और मेरे घर के बाहर बैठकर धर्म की दुहाई दे रहा हूँ योगी नायिका से घर के बारे में जानकारी पूछना आरंभ करता है जिसके जबाव में योगी को घर में मैं अकेली हूँ या सुनने को मिलता है इसके पश्चात योगी ने सुंदर वस्त्र निकालकर उसे धारण कर लिए और अपनी सुंदरता का परिचय दे ही रहा था कि इतने में नायिका के स्वामी का आगमन हो गया तब नायिका उसे घर से सुरक्षित निकलने के लिए उपाय बताते हुए यहत भी बताती है कि तुम उस वृक्ष के पास बैठा करना वही पर बंशी बजाना मैं आजाया करूँगी योगी को नायिका की बृद्धि तीव्र लगती है।

लोकगीतों में सभी कार्य के लिए एक गीत विद्यमान हैं इनमें से एक सोहनी निकोनी के समय गाया जाने वालो गीत है–

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

"नया नया टिकबा के नया हुई गढनियाा....................

____________होबई बदनाम रे सिपहिया।"

मगही लोक गीतों का जाति और कर्म से संबंध है इसलिए किसी विशेष क्रिया कलापों के अवसर पर इन्हीं लोकगीतों द्वारा मनोरंजन किया करते हैं। लोकगीतों में तो राधा कृष्णा के निश्चल प्रेम का भी वर्णन मिलता है। अगर ही लोक गीतों में उच्च एवं निम्न जाति के बीच का अंतर भी स्पष्ट है। किसी और से राजा का पुत्र आ रहा है और उसी और से धोबिन जा रही है, राजा का पुत्र जब किसी और में आ रहा यह जा रहा होता है तो उस ओर से काई भी निम्न जाति के लोगो का आना स्वीकार्य नहीं हैं और जब राजा का पुत्र उस ओर से प्रस्थान करता है तब धोबिन कहती है कि हे राजा के पुत्र थोड़ी दूरी पर चले ताकि इन वस्त्रों के छींटे आप को न छू सके। यह घटना उस स्थान पर घटित होगा जहाँ धोबिन कपड़े धो रही है और उसी एकल मार्ग से राजा का पुत्र जा रहा है इसके पश्चात राजपुत्र धोबिन से कहते है ये छींटे मेरे लिए इत्र समान है। इस वाक्यांश से यह पता चलता है कि अलग क्रम एवं जाति होने के बाद भी राजपुत्र में अपना पत्र की भावना मौजूद है इसका वर्णन भी लोक गीतों में मिलता है जो निम्न जाति के लोग हैं वे अपने आप को बाकियों से पृथक देखते हैं इसीलिए उनकी यह भावना होती है कि वे बड़े उच्च लोगो ओके कार्य के बीच बाधा न बने अर्थात सभी जाति कर्म के लोग अपना अपना काम सुचारू रूप से करें। यह एक गीत के माध्यम से देखते हैं–

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

"हाय रे हाय, कहवा से आवई राजा जी के बेटवा

छडीयव जी, हाय रे हाय।"

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि माघी लोक गीतों में जाति एवं कर्म के आधार पर गीतों का संचयन किया गया है। जाति वर्ण के लोगो में क्या भावना होती है वह अपनी दिनचर्या में से किसी भी पल को गीतनों के माध्यम से कैद कर उसे अपनी मीठी आवाज में गाया करते हैं। गुड पर परिवार में हुए छुटपुट झगड़ों का भी वर्णन लोक गीतों में मिलता है। सांस किस प्रकार अपनी बहू को था ना देती है एवं किस प्रकार धर्म कर्म कांड द्वारा अपनी पूर्जा अर्चना करती है इन सबका वर्णन लोक गीतों में मिलता है। लोकगीतनों में जाती एवं कर्म के आधार पर उनका कार्य निर्धारित है जैसे रोपणी सोहनी धोनी आदि कार्य तय किए गए हैं। गीत में पारिवारिक एवं सांसारिक उत्कृष्टता का परिचय भी मिलता है। कर्म के आधार पर ही मनुष्य का कार्य निर्धारित है जिसे देखकर हम उनकी जाति की पहचान कर सकते हैं। लोकजन की आत्मा उसके लोक गीतों में बसती है जिन्हें एक सामूहिकता के साथ गाया जाता है। मगही लोक गीतों से यह ज्ञात होता है किस प्रकार से किसी भी कठिन से कठिन कार्य को कैसे गीत गाकर उसके सुर में भााव विभोर होकर उस कार्य को आसानी से पूरा किया जा सकता है। कोई भी कार्य ग्राम में समूह में ही मुख्यतः सम्पन्न किया जाता है इसी कारण कार्यकर्ता समय गीतों के माध्यम से मनोरंजन भी प्राप्त होता है। लोक गीत में हर एक जाति की अपनी विशेष जाति गीत होता है। जिसे वह अपना विशेष समझते हैं एवं उनकी पूजा

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

अर्चना करते हैं हर एक जाति में उनका एक देव देवता हैं जिनसे उन्हें आत्मिक शक्ति प्रदान होती है।

लोकगीनों का निर्माण लोक जन की भाषा अर्थात वहाँ की मूल भाषा में होता है। इसमें जन भाषा की समझ के साथ ही गीतों का निर्माण होता है ताकि लोग आसानी से समझ सकमें वह गा भी सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उमांशंकर भट्टाचार्य की कहावत (1919)
2. जय नाथ पति और महावीर सिंह कृतः मगही मुहावरा बुझौवल (1928)
3. डॉ विश्वनाथ प्रसाद कृतः मगही संस्कार गीत (1965)
4. संपत्ति आर्यन कृतः मगही लोक साहित्य (1996)
5. संपत्ति आर्यन कृतः मगही लोक साहित्य(1965)
6. डॉक्टर राम प्रसाद सिं कृतः मगही लोकगीत के संग्रह(1998)
7. इनामुल हक कृतः मगही लोक गाथाओं का साहित्यिक अनुशीलन (2006)
8. डॉ श्रीकांत शास्त्री एवं डॉ रामानंद कृतः मगही लोकगीत एवं सेंशन
9. मथुरा प्रसाद सिंह एवं रामेश्वर महतो कृतिः मगही बाल गीत
10. विश्वनाथ प्रसाद कृतः मगही संस्कार गीत
11. संत राम नगीना सिंह कृतः मगहिया गीत
12. श्री नंदन शास्त्री कृतः अप्पन गीत
13. रामदास आर्य कृतः गीत आदमी के आदि।

ISSN:2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2022
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism/Guide Name/ Educational Qualification/Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright/ Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or donot submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

रामनिवास शर्मा

******